अखियाँ हरी दर्शन की प्यासी

अखियाँ हरी दर्शन की प्यासी |

देखियो चाहत कमल नैन को, निसदिन रहेत उदासी |

आये उधो फिरी गए आँगन, दारी गए गर फँसी |

केसर तिलक मोतीयन की माला, ब्रिन्दावन को वासी |

काहू के मन की कोवु न जाने, लोगन के मन हासी |

सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिन, लेहो करवट कासी |

कवि : सूरदास
स्वर : मोहम्मद रफ़ी

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/11/title/akhiyan-hari-darshan-ki-pyasi

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |